रामचरित मानस में प्रकृति चित्रण

प्रो0 माधुरी कुमारी*

प्रकृति काव्य का विलास है, विशिष्ट प्रेरणास्त्रोत है। जब कभी कवि भावनालोक में विचरण करने लगता है तो उसकी संवेदनायें प्रकृति के अधिक निकट आती है, यह ध्रुव सत्य है। यही कारण है कि विश्व के अनेक कवियों ने प्रकृति में अवस्थित अक्षय सौंदर्य, पीयूष तुल्य आनन्द, अंतर्भुक्त रस एवं अप्रतिम उल्लास का खुलकर रसपान किया है। इन कवियों ने प्रकृति को ग्रहण भी कई रूपों के परिप्रेक्ष्य में किया है।

भारतीय काव्य के लिए तो प्रकृति प्राण है, अमृत का घूंट है। यहां प्रकृति और कवि का आत्मीय सम्बन्ध है। भारत का कवि यह मानता है कि प्रकृति के बिना मानव–मन रेगिस्तान है और मानव–जीवन के बिना प्रकृति प्राण शून्य। प्रकृति का रूप यहां अधिक सघन विस्तार पा गया है। प्रकृति के क्रीड़ा विलास का चित्रण भी खूब हुआ है। भारतीय प्रकृतवाद की एक खास विशेषता है यहां के प्रकृति दर्शन पर आदर्शवाद की छाप। दूसरे, इसी के माध्यम से साहित्य और कला में जो संबंध है, स्पष्ट हो जाता है। तत्वतः इसी हेतु भारतीय प्रकृति–काव्य की पृष्ठभूमि काफी व्यापक हो गयी है। इसलिए संस्कृत और हिन्दी, दोनों काव्य प्रकृति के बेल–बूटों से काफी अलंकृत हो गये हैं। इस सम्बन्ध में पीछे के प्रकरणों में ही विशद विवेचना हो चुकी है। फिर भी यहां पर यह कहना कि संस्कृत–काव्य ने प्रकृति का स्वागत अधिक किया है, असंगत न होगा। वाल्मीकि, कालिदास और भवभूति ने तो इस क्षेत्र में विश्व के कवियों को चुनौती दी है। हिन्दी काव्य इस क्षेत्र में संकुचित हो गया है, दब गया है।

इसमें सन्देह नहीं कि प्रकृति के अनन्य सहचर महर्षि वाल्मीकि ने अपने प्रकृति पर्यवेक्षक की अमित विभूति को अत्यधिक विस्तार देकर अपने ग्रंथ को प्रकृति की विस्तृत लीलास्थली बना दिया है। किन्तु गोस्वामी जी ने भी अपने मानस में प्राकृतिक दृश्यों चित्रों एवं व्यापारों की कमी का अनुभव नहीं होने दिया है। अपने मानस को प्राकृतिक रूपक देकर प्रारम्भ में ही अपने प्रकृति प्रेम का परिचय दे दिया है। उसके पढ़ने के उपरान्त हम अनुभव किए बिना नहीं रह सकते। मानस भी प्रकृति के कोमल एवं मनोहर उपादानों की एक विशाल रंगस्थली है। तुलसीदास द्वारा प्रस्तुत किया गया प्राकृतिक चित्र वाल्मीकि की तरह शुद्ध प्राकृतिक रूप में नहीं दिखाई देता बल्कि यत्र–तत्र सवारा दिखाई पड़ता है।

प्रकृति के भव्य और अभव्य, उर्वर और अनुर्वर दोनो रूपों का ही चित्र खींचने वाला कवि प्रकृति का सफल चितेरा कहा जा सकता है। गोस्वामीजी ने दोनो रूपों में प्रकृति का चित्रण सफलतापूर्वक किया है। अंग सौन्दर्य की पृष्ठभूमि से उन्होंने यदि कहीं पूर्णात्फुल्ल इन्दीवरों का उल्लेख किया है तो हिम व आतप से कुम्हलाए हुए कमलों की चर्चा करना भी वे नहीं भूले। उनकी राशिभूत उत्प्रेक्षाओं में उनकी विराट प्रकृति संवेदना का रहस्य ही नहीं वरन प्रकृति के करूण–कोमल गरिमा का इतिहास भी अंकित दिखाई देता है। *'पंकज कोष ओस कन जैसे' 'जनु जवास पर पावस पानी' 'परसत तुहिन तामरस जैसे' 'जनु विनु पंख विहग वेहालु' 'दामिनि मनहुं हतेउ तरू मूल'*। सदृश कवि कि शतशत भावुक उत्प्रेक्षाओं में मानव करूणा के साथ प्रकृति के करूण रूप का निखार भी देखते ही बनता है।

गोस्वामीजी का प्रकृति चित्रण समग्र रूप से तो प्राचीन संस्कृत कवियों के जैसा सूक्ष्म एवं संश्लिष्ट नहीं है फिर भी उनकी प्रकृति सम्बन्धी संवेदना में प्राचीन हिन्दी कवियों में सर्वोच्च स्थान देने की क्षमता रखता है। किसी ने वाल्मीकि के प्रौढ़ प्रकृति वर्णन के सामने तुलसी के प्रकृति वर्णन को शिशुतुल्य एवं निरीह बताया है तो किसी ने उन्हें सर्वथा प्रकृति निरपेक्ष बताने की चेष्टा की। कुछलोगों ने यह आरोप लगाया कि गोस्वामीजी के काव्य में आधुनिक छायावादी कवियों सा प्रतिस्पंदन एवं मानवीकरण नहीं पाया जाता। इन विविध प्रश्नों एवं आरोपों के संबंध में पहली बार यह निवेदन करना चाहेंगे कि गोस्वामी जी को एक पक्षीय एवं एकांगी बनाकर देखने की चेष्टा न करें।

गोस्वामी जी के प्रकृति चित्रण पर विचार करते समय आलोचकों को यह ख्याल रखना चाहिए कि वे एक भक्ति कवि थे। अपने निजी दृष्टिकोण से किसी कवि की रचना का न्यूनाधिक मात्रा में प्रभावित होना अत्यन्त स्वाभाविक है। उदाहरण के लिए संत समाज सुधारक होने के नाते किसी भी कवि के प्रकृति निरूपण में उपदेशात्मक तत्व का आरोप हो जाना स्वाभाविक है। कवि के व्यक्तित्व का विकास विभिन्न दिशाओं में हुआ है। तुलसीदास केवल कवि नहीं थे बल्कि धर्मोपदेशक भक्त संत कवि थे। अतः उनकी रचनाओं में उपदेश एवं नीति का बाहुल्य भी है। मनोरंजन के साथ अगर कुछ उपदेश भी मिले तो वह कार्य मात्र चित्रण की अपेक्षा श्रेष्ठ समझना चाहिए। जहां तक प्रकृति में चेतन व्यक्तित्व के आरोप अथवा मानवीकरण का प्रश्न है, छायावादी शैली में पाये जाने वाले मानवीकरण की छाया तुलसीदास के काव्य में नहीं देखी जा सकती है। वस्तुतः

***सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग आर0 एस0 डिग्री कॉलेज भगवानपुर (कैमूर)**

छायावाद युग की कसौटी पर तुलसीदास को ही नहीं समूचे भक्तिकाल के प्रकृति चित्रण का विवेचन करना युग की प्रवृत्तियों की अवहेलना करना होगा।

गोस्वामी जी के प्रकृति चित्रण में सर्वत्र तो नहीं पर अनेक स्थलों पर संश्लिष्ट चित्रण की झांकी मिलती है जिनमें अर्थ ग्रहण की नहीं प्रत्युत विम्ब ग्रहण कराने की पूरी क्षमता मिलती है। अलंकार विधान एवं चमत्कार के चक्कर में वे केशव की भांति कहीं नहीं पड़े। उपदेश एवं गुरूता से युक्त होने पर भी प्रकृति के प्रति उनका अनुराग सर्वत्र जागृत रहा। केशव की भांति देश काल की विशेषताओं का अतिक्रमण नहीं किया है।

वर्षा एवं शरद् ऋतु के चित्रण के प्रसंगों में कवि के धार्मिक प्रवृत्ति का परिचय हमें पग–पग पर प्राप्त होता है। शील और धर्म को उन्होंने जीवन के लिए आवश्यक अंग के रूप में स्वीकार कर रखा था। प्रकृति चित्रण में उसका पालन उन्होने किया है। अपनी प्रकृति को जिस महान पृष्ठभूमि पर लाकर अंकित करने का प्रयत्न किया है वह उन्हीं के समान संयमी और सामार्थवान कवि के लिए सम्भव था। उनके उपदेश बहुल प्रकृति चित्रण के पीछे छिपी हुई इस शक्ति के रहस्यों से परिचित होना इनके आलोचकों के लिए आवश्यक है। गोस्वामीजी ने अपनी शीलसंरक्षिका एवं उपदेश युक्त प्रकृति को समाज दर्शन का अविच्छिन्न अंग बना लिया था। फलतः मानस में उसको प्रकट करना नहीं भूले।

तुलसीदास प्रकृति जगत के कोरे दर्शक या तमाशवीन नहीं थे। उन्होने प्रकृति की सम्पूर्णता का साक्षात्कार किया था। प्रकृति के रौद्र तथा भयंकर रूप की झलक भी हमें मानव कार्य कलापों की सादृश्य योजना के क्षेत्र में गोस्वामी तुलसीदास के काव्य में अपनी सम्पूर्ण प्रभविष्णुता के साथ देखने को मिलती है। कैकेयी की कोपमुद्रा के समय रूपक का तो ऋषि ने निर्वाह किया ही है, प्रकृति के भयंकर रूप को उद्घाटित करने में भी पूर्णतः समर्थ हुआ है।

रामचरित मानस में प्रकृति का विभिन्न रूपों में चित्रण मिलता है। प्रकृति के आलम्बन रूप, उद्दीपन रूप, अलंकार रूप एवं उपदेश युक्त प्रकृति चित्रण की विशेष प्रधानता है। इसमें भी खास कर उपदेश परक रूप की विशेष प्रधानता है। उपदेश बहुल चित्रण को देखकर प्रायः लोग कहते हैं कि प्रकृति का चित्रण गौण हो गया है और उपदेश ही प्रधान हो गया है।

पर यह धारणा उचित नहीं। मानस का लक्ष्य लोकमंगल परक है। अतः प्रकृति को भी लोक मंगल परक संदर्भ में देखना गोस्वामी जी को अभिष्ट रहा है। इसलिए मनुष्य के जीवन में प्रकृति उपदेष्टा के रूप में यदि आवे तो इसमें कवि

का प्रकृति के प्रति उदासीन दृष्टिकोण व्यक्त नहीं होता बल्कि प्रकृति को जीवन के संदर्भ में देखने का प्रयास है।

प्रायः यह भी लोग कहते हैं कि मानस का प्रकृति चित्रण भागवत का अविकल अनुवाद है, पर बात ऐसी नहीं है। मानस के प्रकृति चित्रण में गोस्वामी जी के स्वतंत्र स्वभाव का भी दर्शन होता है पर प्रभाव भागवत का अधिक अवश्य है।

संदर्भ ग्रंथ –

1. राम चरित मानस का काव्य शास्त्रीय अनुशीलन – डॉ0 राज कुमार पाण्डेय
2. हिन्दी काव्य में प्रकृति चित्रण – डॉ0 किरन कुमारी गुप्ता
3. कविता में प्रकृति चित्रण – रामेश्वर लाल खण्डेलवाल